नवभारत
संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी

आम आदमी के न्याय के लिए जायज चिंता

भारत के मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत शनिवार और रविवार को इंदौर में थे. यहां उन्होंने आम आदमी तक न्याय पहुंचाने को लेकर चिंता जाहिर की.दरअसल, न्याय का अर्थ केवल फैसला नहीं, भरोसा भी है. भारत में न्याय व्यवस्था को लेकर सबसे बड़ी चुनौती केवल अदालतों में लंबित मामलों की संख्या नहीं है. असली चुनौती यह है कि न्याय की तलाश में अदालत तक पहुंचने वाला सामान्य नागरिक वहां से अपने अधिकारों के साथ-साथ सम्मान और भरोसा लेकर लौटे. मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत का यह कहना इसलिए महत्वपूर्ण है कि न्याय तभी सार्थक है, जब लोगों से उनकी भाषा में बात की जाए, उनकी बात सुनी जाए और उनके दुख-दर्द को समझा जाए. यह कथन भारतीय न्याय व्यवस्था में व्यापक और मानवीय सुधार की जरूरत की ओर संकेत करता है. न्यायपालिका लोकतंत्र का वह स्तंभ है, जहां अंतिम उम्मीद लेकर नागरिक पहुंचता है. लेकिन गरीब, अशिक्षित, दिव्यांग, महिला, बच्चे और समाज के कमजोर वर्गों के लिए न्याय तक पहुंच आज भी आसान नहीं है.

कानूनी प्रक्रिया की जटिलता, भाषा की बाधा, मुकदमों का लंबा खिंचना और न्यायिक संस्थानों तक पहुंच की कठिनाई आम नागरिक के मन में व्यवस्था के प्रति दूरी पैदा करती है. ऐसे में न्यायिक सुधार का अर्थ केवल अदालतों की संख्या बढ़ाना या तकनीक का इस्तेमाल करना नहीं हो सकता. सुधार का केंद्र स्वयं वह नागरिक होना चाहिए, जो न्याय की उम्मीद लेकर व्यवस्था के सामने खड़ा है. सीजेआई ने पैरा-लीगल वालंटियर्स के लिए 'रिसीव, हर्ड एंड बिहेवियर' यानी व्यक्ति को सम्मान से स्वीकार करना, उसकी बात ध्यान से सुनना और संवेदनशील व्यवहार करना जिस तरह रेखांकित किया है, वह पूरे न्याय तंत्र के लिए मार्गदर्शक सिद्धांत बन सकता है. न्यायालय में आने वाला व्यक्ति कोई केस नंबर नहीं, बल्कि अपनी समस्या और पीड़ा के साथ आया हुआ इंसान है. इसलिए न्यायिक प्रक्रिया में मानवीय संवेदना को संस्थागत रूप देना समय की आवश्यकता है.

बहरहाल, भारत में न्यायिक सुधार का एक महत्वपूर्ण पहलू स्थानीय भाषाओं में न्याय की उपलब्धता भी होना चाहिए. संविधान नागरिक को न्याय का अधिकार देता है, लेकिन यदि वह अपनी ही भाषा में अपनी समस्या ठीक से व्यक्त न कर सके तो यह अधिकार अधूरा रह जाता है. अदालतों और विधिक सेवा संस्थानों में स्थानीय भाषाओं के व्यापक उपयोग, सरल कानूनी भाषा और प्रभावी कानूनी सहायता को प्राथमिकता दी जानी चाहिए. एक अन्य बड़ी आवश्यकता मुकदमों के त्वरित निपटारे की भी है. वर्षों तक चलने वाला मुकदमा कई बार न्याय मिलने के बाद भी पीड़ित के लिए न्याय को अर्थहीन बना देता है. न्याय में देरी अंततः न्याय से वंचित करने के समान है. इसके लिए न्यायाधीशों की संख्या बढ़ाने, अदालतों के बुनियादी ढांचे को मजबूत करने, तकनीक के बेहतर इस्तेमाल और वैकल्पिक विवाद समाधान तंत्र को अधिक प्रभावी बनाने की दिशा में तेजी से काम होना चाहिए.न्याय नागरिक पर कोई एहसान या चैरिटी नहीं है. यह उसका संवैधानिक अधिकार है. इसलिए भारत में न्यायिक सुधार का अंतिम लक्ष्य ऐसी व्यवस्था बनाना होना चाहिए, जहां नागरिक को केवल फैसला मिलने की नहीं, बल्कि सुने जाने, समझे जाने और सम्मान पाने की भी अनुभूति हो. न्याय का मंदिर तभी वास्तव में जनविश्वास का मंदिर बनेगा, जब उसके दरवाजे पर पहुंचने वाला अंतिम व्यक्ति भी यह भरोसा लेकर लौटे कि व्यवस्था उसके साथ खड़ी है.

स्वास्थ्य और विकसित भारत की मजबूत नींव

जगत प्रकाश नड्डा

> भारत का विश्व स्तर पर पहचान बना चुका दवा उद्योग, मजबूत इंजीनियरिंग क्षमता, तेजी से फैलता डिजिटल ढांचा, तेजी से बढ़ता नए उद्यमों का क्षेत्र और कुशल मानव संसाधन अगली पीढ़ी की चिकित्सा तकनीक विकसित करने के लिए मजबूत आधार प्रदान करते हैं. कृत्रिम बुद्धिमत्ता, चिकित्सा उपकरण के रूप में इस्तेमाल होने वाले सॉफ्टवेयर (एसएमडी), इंटरनेट से जुड़े चिकित्सा उपकरण, रोबोट आधारित तकनीक और दूर से जांच जैसी नई तकनीकों में भारत के पास देश और दुनिया की स्वास्थ्य जरूरतों के लिए नए समाधान विकसित करने के बड़े अवसर हैं. जैसे-जैसे भारतीय कंपनियां दुनिया के बाजार में विस्तार कर रही हैं, गुणवत्ता भी भारत में बने चिकित्सा उपकरणों की सबसे बड़ी पहचान बनती जा रही है. सरकार नियामक व्यवस्था को मजबूत करने, मान्यता प्राप्त जांच सुविधाओं का विस्तार करने, चिकित्सा उपकरणों की प्रभावशीलता से जुड़े वैज्ञानिक प्रमाण तैयार करने और अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप व्यवस्था विकसित करने पर जोर दे रही है. इससे मरीजों की सुरक्षा बढ़ेगी और वैश्विक बाजार में भारत की प्रतिस्पर्धा क्षमता भी मजबूत होगी. दुनिया के स्तर पर प्रतिस्पर्धी चिकित्सा तकनीक क्षेत्र तैयार करने के लिए सरकार, उद्योग, शिक्षण संस्थानों, स्वास्थ्य सेवा देने वालों, नए उद्यमों और निवेशकों के बीच करीबी सहयोग जरूरी है. जब प्रयोगशालाओं में तैयार विचार आसानी से कारखानों तक और वहां से मरीजों तक पहुंचते हैं, तभी नए आविष्कारों को वास्तविक लाभ में बदला जा सकता है.

भारत ने पिछले एक दशक में स्वास्थ्य सुविधाओं के क्षेत्र में अभूतपूर्व विस्तार किया है. सरकारी और निजी क्षेत्र में अस्पतालों, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों, जांच केंद्रों और मेडिकल कॉलेजों की संख्या तेजी से बढ़ी है.शहरों के साथ-साथ ग्रामीण क्षेत्रों में भी स्वास्थ्य सुविधाओं का विस्तार हुआ है. यह सरकार की ऐसी नीतियों को दर्शाता है, जिनका केंद्र आम नागरिक की स्वास्थ्य सुरक्षा है. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में सरकार ने गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाओं को हर नागरिक तक पहुंचाने के लिए काम किया है. इन लगातार किए गए प्रयासों का परिणाम है कि देश में लोगों द्वारा अपनी जेब से स्वास्थ्य सेवाओं पर किए जाने वाले खर्च में पिछले कुछ वर्षों में बड़ी कमी आई है. यह खर्च पहले 65 प्रतिशत तक था, जो अब घटकर 43 प्रतिशत रह गया है. जिला अस्पताल में जन्म लेने वाले नवजात शिशु से लेकर बड़े अस्पताल में इलाज करा रहे कैंसर मरीज तक, आधुनिक स्वास्थ्य व्यवस्था में भरोसेमंद, अच्छी गुणवत्ता वाले और किफायती चिकित्सा उपकरण बेहद जरूरी हो गए हैं. प्रधानमंत्री आयुष्मान भारत स्वास्थ्य अवसंरचना मिशन के तहत सरकार ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों की सार्वजनिक स्वास्थ्य व्यवस्था को मजबूत कर रही है. इसके लिए प्रयोगशालाओं को बेहतर बनाने, गंभीर मरीजों के इलाज की सुविधाएं बढ़ाने, बीमारियों की निगरानी व्यवस्था मजबूत करने और आपात स्थिति से निपटने की क्षमता बढ़ाने पर निवेश किया जा रहा है. जैसे-जैसे भारत 2047 तक विकसित भारत बनने की दिशा में आगे बढ़ रहा है, अब जोर एक आत्मनिर्भर चिकित्सा तकनीकक्षेत्र तैयार करने पर है. इसका उद्देश्य स्वास्थ्य सेवाओं को और सस्ता, आसानी से उपलब्ध और किसी भी संकट के समय मजबूत बनाना है. पहले ,भारत कई आधुनिक और जटिल चिकित्सा उपकरणों के लिए काफी हद तक दूसरे देशों से होने वाले आयात पर निर्भर था. इन तकनीकों से स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार तो हुआ, लेकिन इससे इलाज की लागत बढ़ी, आपूर्ति व्यवस्था पर बाहरी निर्भरता बनी रही और इन उपकरणों की पहुंच सीमित रही. इसी जरूरत को देखते हुए राष्ट्रीय चिकित्सा उपकरण नीति, 2023 में देश के भीतर आधुनिक चिकित्सा उपकरण बनाने की क्षमता बढ़ाने पर जोर दिया गया. इसका उद्देश्य चिकित्सा उपकरणों को सस्ता बनाना और जांच की लागत कम करना है. सरकार ने चिकित्सा उपकरणों के पूरे क्षेत्र को मजबूत करने के लिए कई योजनाएं शुरू की हैं. इनमें उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन योजना, चिकित्सा उपकरण पार्क और दवा एवं चिकित्सा तकनीक के क्षेत्र में अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा देने वाली योजना शामिल हैं. इन पहलों से देश में चिकित्सा उपकरणों के निर्माण, नए शोध, निवेश और वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा के लिए बेहतर माहौल तैयार हो रहा है. नतीजे उत्साह बढ़ाने वाले हैं. उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन योजना के तहत 50 से अधिक आधुनिक चिकित्सा उपकरणों का देश में उत्पादन शुरू हो चुका है. इसके साथ ही इस क्षेत्र में विदेशी निवेश लगातार बढ़ रहा है, जो वैश्विक निवेशकों के बढ़ते भरोसे को दर्शाता है. ये उपलब्धियां बताती हैं कि भारत धीरे-धीरे दुनिया के चिकित्सा तकनीक क्षेत्र में एक भरोसेमंद भागीदार के रूप में उभर रहा है. सिर्फ चिकित्सा उपकरणों का निर्माण केंद्र बनने के अलावा, भारत तेजी से आधुनिक चिकित्सा तकनीकों को अपना भी रहा है, ताकि लोगों का जीवन बेहतर बनाया जा सके. आधुनिक जांच सुविधाओं, शरीर की अंदरूनी तस्वीर लेने वाली मशीनों, शरीर में लगाए जाने वाले चिकित्सा उपकरणों, गहन चिकित्सा की मशीनों और डिजिटल स्वास्थ्य सेवाओं को किफायती दर पर उपलब्ध कराने से मरीजों पर इलाज का आर्थिक बोझ कम होता है. साथ ही इलाज की गुणवत्ता और समय पर इलाज मिलने में भी सुधार होता है. देश में ही चिकित्सा उपकरण बनने से विदेशों से आयात पर निर्भरता घटती है, आपूर्ति व्यवस्था मजबूत होती है और लागत कम करने के अवसर बढ़ते हैं.

(लेखक-भारत सरकार में केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री तथा रसायन एवं उर्वरक मंत्री हैं.)

निशानेबाज

मजबूत हो रहे विपक्ष के घेरे कोई मुंह फेरे या पीठ फेरे

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, राज्यसभा में विपक्ष के नेता मल्लिकार्जुन खडगे ने ज्वलंत मुद्दा उठाया है कि 15 दिनों से प्रधानमंत्री मोदी और गृहमंत्री शाह सदन से गायब हैं. ऐसे में छात्रों से की गई बर्बरता का हिसाब कौन देगा? आप भी सोचकर बताइए कि क्या आबादी के लिहाज से विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र भारत के इन शीर्ष नेताओं का संसद की ओर से पीठ फेर लेना उचित है?' हमने कहा, 'कोई मुंह फेरे या पीठ फेरे, आपको क्या लेना-देना! कभी कोई अपने मतलब के लिए मुखातिब होता है तो कभी देखते ही मुंह फेर लेता है. आपने राजकपूर व नरगिस की पुरानी फिल्म 'आवारा' का गीत सुना होगा- दम भर जो उधर मुंह फेरे ओ चंदा आ-आ-आ, मैं उनसे प्यार कर लूंगी, बातें हजार कर लूंगी !' पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, हम मुंह की नहीं पीठ फेरने की बात कर रहे हैं. उसके संबंध में कुछ बताइए. राजनीति में हम देख रहे हैं कि नेता एक पार्टी की टिकट पर चुनकर आते हैं और मतदाताओं से पीठ फिराकर दूसरी पार्टी में शामिल हो जाते हैं. अवसरवादी लोगों की नीति होती है- जैसी बहे बयार, पीठ पुनि तैसी कीजे !' हमने जवाब दो कहा, 'बड़ी अदालत में खंडपीठ, पूर्ण पीठ और संविधान पीठ होती है. किसी शातिर अपराधी की पीठ पर बड़े नेता का हाथ होता है. गरीब का पेट हमेशा उसकी पीठ से लगा होता है. इंसान के लिए सबसे कठिन काम नहाते समय अपनी पीठ पर साबुन लगाना होता है. फैशन शो में मॉडल अपनी पीठ खुली रखती हैं. जब किसी पर अन्याय होता है तो वह कहता है-पीठ पर मारो, पेट पर मत मारो! किसी को शाबासी या प्रोत्साहन देने के लिए उसकी पीठ पर हाथ फेरा जाता है. जिगरी दोस्ती में यार-दोस्त एक-दूसरे की पीठ पर धौलधप्पा जमा कर कहते हैं- कहां चला गया था इतने दिन, अब मिलने आया है! बहादुर लोग दुश्मन को पीठ नहीं दिखाते जबकि विश्वासघाती हमेशा पीठ में छुरा घोंपता है. आम जनता अपनी पीठ पर बढ़े हुए टैक्स और महंगाई का बोझ ढोती है. जिन कर्मचारियों की पीठ मजबूत होती है उन पर मालिक गधे जैसा बोझ लाद देता है. बेईमान नेता व्यासपीठ पर खड़े होकर जनता को ईमानदारी बरतने का भाषण देते हैं.' पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, आपने अपने मन की बात कह दी. अब हम भी यहां से पीठ फिराकर खिसकते हैं.'

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

विंध्य की डायरी

खुली आंखों से देखे सपने और विंध्य का विकास

डॉ. रवि तिवारी

रीवा कभी विंध्य प्रदेश की राजधानी हुआ करता था और इसका अपना गौरवशाली इतिहास रहा है. विंध्य की तस्वीर तेजी से बदल रही है. विंध्य के विकास को नए पंख लग गये हैं . विंध्य के विलय के बाद विकास की गति कुछ वर्षो तक धीमी पड़ी और समय चक्र के बदलने के साथ विंध्य का विकास शैक्षणिक क्षेत्र में तेजी से हुआ. धीरे-धीरे समय बदला और विकास का पहिया डग़मगाने लगा. इसके बाद फिर समय बदला और आवश्यकताओं के साथ मांग बढ़ी. विंध्य में वह सब कुछ है जो किसी भी क्षेत्र को विकसित और अग्रणी बनाने में सहायक होता है. पर्यटन, उद्योग, कला , संस्कृति, व्यापार एवं निवेश की पर्याप्त संभावनाओं के बीच एयरपोर्ट की कमी वर्षो से खल रही थी. रीवा में 1962 में हवाई पट्टी की स्थापना हुई थी, उसके बाद किसी ने आगे नही सोचा. कुछ वर्षो बाद रीवा विंध्य की तस्वीर तेजी से बदलने लगी, बस जरूरत थी विंध्य को देश के महानगरों से जोडने की और फिर विंध्य के विकास पुरूष कहे जाने वाले प्रदेश के उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ला की इच्छा शक्ति ने रीवा एयरपोर्ट की परिकल्पना को साकार किया. अक्टूबर 2023 को भूमि पूजन और 19 महीने बाद भव्य एयरपोर्ट का लोकार्पण हुआ. इसके साथ ही विंध्य दिल्ली, इंदौर, रायपुर एवं भोपाल, कोलकाता से सीधे जुड़ गया. यह सब संभव हुआ उप मुख्यमंत्री शुक्ल के मैराथन प्रयास और उनके जिद जुनून के कारण, महज 10 माह के अंदर देश के 5 बड़े महानगरों के साथ चौतरफा हवाई सेवा से जुडना यह केवल सुगम यात्रा ही नही बल्कि विंध्य क्षेत्र के विकास का स्वर्णिम युग का संचार हुआ है. यहां यह कहना गलत नही होगा कि खुली आंखों से देखे सपने साकार होते हैं बस साहस और इच्छा शक्ति हो. निश्चित रूप से उद्योग, व्यापार, पर्यटन एवं निवेश की संभावनाएं तेजी से बढ़ेगी और आने वाले समय में विंध्य देश के नक्शे में अपना अलग स्थान स्थापित करेगा.

कप्तान की सूची चर्चा में....

पुलिस कर्मियों के प्रदेश स्तर पर हुए स्थानान्तरण के बाद जिले स्तर पर पुलिस कप्तान पुलिस कर्मियों को जिले के अंदर इधर से उधर कर रहे हैं . हाल ही में रीवा पुलिस कप्तान द्वारा पुलिस कर्मियों की जारी की गई तबादला सूची इस समय चर्चा में है. एक सैकड़ा से अधिक पुलिस कर्मियों को शहर एवं देहात के थानों में पदस्थापना की गई है. सूची को लेकर चर्चा है कि इसमें पुलिस कप्तान की रूचि कम बल्कि थाना प्रभारियों की रूचि ज्यादा रही. थाना प्रभारियों ने अपने हिसाब से अपने चहेते आरक्षकों को अपने पास बुलाया है. कई घाघ पसंदीदा आरक्षकों को थाना प्रभारियों ने अपने थाने में पदस्थ कराने में सफलता हासिल की है और इसके लिये कोई खास मेहनत भी नही करनी पड़ी. सरल स्वभाव के पुलिस कप्तान को थाना प्रभारियों की चालबाजी समझ में नही आ रही है. दरअसल उनका उद्देश्य है जिले में अपराध पर नियंत्रण, ऐसे में थाना प्रभारी होनहार आरक्षकों की कमी बताकर अपने चहेतों को थाने में पदस्थ कराने में सफल हो गये

वर्षों बाद कोई प्रशासक पहुंचा जनता के बीच

किसी भी संस्था या संगठन का पद पाने के बाद बहुत कम लोग होते है जो जनता और हितग्राहियों से मैदान पर उतर कर सीधे संवाद करते हैं . वर्षो बाद अपेक्स बैंक के प्रशासक/अध्यक्ष विंध्य के दौरे पर पहुंचे और जनता के साथ कार्यकर्ताओं से सीधे संवाद किया. योजनाओं की जानकारी लेने के साथ महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा की. अपेक्स बैंक के अध्यक्ष महेन्द्र सिंह यादव पदभार ग्रहण करने के बाद लगातार क्षेत्र भ्रमण पर है. हाल ही में विंध्य के दौरे में पहुंचे और सिंगरौली, सीधी के साथ मऊगंज पहुंचकर जनता से मिले और फीडबैक लिया. साथ ही स्थानीय जनप्रतिनिधियों एवं कार्यकर्ताओं से मिलकर अपेक्स बैंक के कार्यो की चर्चा की. वर्षो बाद ऐसा हो रहा है जब अध्यक्ष का विंध्य में इस तरह दौरा हो रहा है.

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12345

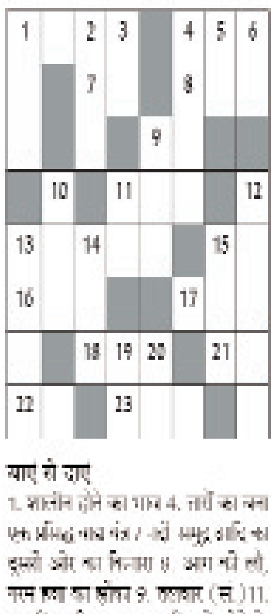

ऊपर से नीचे
1. सरस्वती, एक प्रकार की वीणा 2. नाचने की क्रिया, नाचने की [illegible] 3. [illegible]

बाएं से दाएं
1. [illegible]

Solution 12344

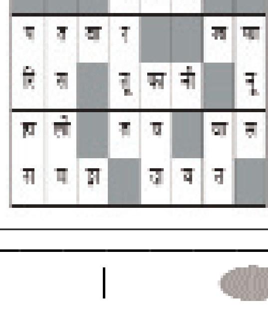

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में पारिवारिक तनाव रहेगा. मन और मस्तिष्क में चिन्ता रहेगी. स्वास्थ्य कष्ट होगा, और परेशानी में वृद्धि होगी. वर्ष के मध्य में शिक्षा के क्षेत्र में सफ़लता मिलेगी, पूर्व निर्धारित कार्यो में सफ़लता के योग है. वर्ष के अन्त में सामाजिक कार्यो में ख्याति प्राप्त होगी. वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग मिलेगा. मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को शिक्षा में सफ़लता प्राप्त होगी. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को पारिवारिक तनाव रहेगा. कर्क राशि के व्यक्तियों को स्वास्थ्य स्वास्थ्य कष्ट होगा. सामाजिक ख्याति प्राप्त होगी. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को पूर्व निर्धारित कार्यो में सफ़लता के योग है. सिंह राशि के व्यक्तियों को यथेष्ठ सतर्कता बांछनीय. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को पूव निर्धारित कार्यो में अधिकाकारियों का सहयोग लेना पड़ेगा. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को नियमितता का ध्यान रखकर कार्य करना हितकर रहेगा.

मेष- अधिकारी आपकी कार्यशैली से नाराज हो सकते है. मित्रों की नाराजगी दुखी कर सकती है.

वृषभ- अधिकारों के लिये संघर्ष करना पड़ सकता है. अविवाहित वैवाहिक कार्य को लेकर उत्साहित रहेंगे.

मिथुन- नये संपक्र संपक्र बीती बातको भूलकर काम में जुट जायें, सफ़ल रहेंगे. पुराने मित्रों का सहयोग रहेगा.

कर्क- आपके विचारों से अधिकारी प्रभावित होंगे. प्रतियोगी परीक्षा में सफ़लता के आसार है. अचानक लाभ.

सिंह- मनचाहा काम मिलने से उत्साह रहेगा. राजकीय कार्य बनाने के आसार हैं. इच्छित कार्य में सफ़लता मिलेगी.

कन्या- आपको अपने फैसले से पछताना पड़ सकता है. नये कार्य वृषभे बढ़ाने में परेशानी होगी.

तुला- नये संपर्क आपकी तरक्की में सहायक रहेंगे. साथी के स्वास्थ्य की चिन्ता रहेगी. मानसिक अस्थिरता रहेगी.

वृश्चिक- जिम्मेदारी नहीं निभाने से परेशानी हो सकती है. विरोधी आरोप लगाने का प्रयास करेंगे.

धनु- झूठ बोलकर काम कराने का प्रयास हानिकारक हो सकता है. व्यवसायिक क्षेत्र में सफ़लता मिलेगी.

मकर- भाग्योदय के अवसर मिलेंगे. कार्य क्षमता के बल पर अपनी पहिचान बना लेंगे. शत्रु वर्ग परास्त होगा.

कुम्भ- विरोधियों को मात देने में कामयाब रहेंगे. अटके काम पूरे होंगे. धर्म कर्म के प्रति आस्था रहेगी.

मीन- विवादास्पद मामलों में समझौता करना पड सकता है, रोगी की चिन्ता रहेगी. अतिथि वृषभमन होगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक स्वस्थ्य और गौरवर्ण होगा. दुबला पतला फुर्तीला, होगा. अपने मन की बात दूसरों पर जल्दी प्रकट नहीं करेगा. बुद्धिमान और विवेकी होगा. माता पिता का भक्त होगा. इनके मित्रों की संख्या अधिक रहेगी. अपने मन की बात दूसरों को व्यक्त नहीं करेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

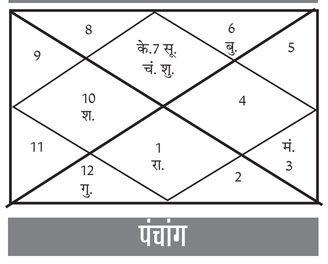

पंचांग

रा.मि. 19 संवत् 2083 श्रावण कृष्ण द्वादशी चन्द्रवासरे प्रात: 5/55 तदुपरि त्रयोदशी तिथौ रात 3/11, आर्द्रा नक्षत्रे दिन 11/40, वज्र योगे रात 10/54, तैतिल करणे सू.उ. 5/29, सू.अ. 6/31, चन्द्रचार मिथुन रातअंत 4/29 से कर्क, पर्व- सोम प्रदोष व्रत, शु.रा. 3,5,6,9,10,1 अ.रा. 4,7,8,11,12,2 शुभांक- 5,7,1.

व्यापार भविष्य

श्रावण कृष्ण चर्तुदशी को पुनर्वसु नक्षत्र के प्रभाव से सोना, चांदी, तांबा, पीतल, लोहा, निकल, आदि वस्तुओं में नरमी की चाल चलेगी. सरसों, अरंडी, अलसी, मूंग, मोठ, के भाव में तेजी होगी. जीरा, धनियां, लालमिर्च पूर्ववत रहेंगे. भाग्यांक 1487 है.

SUDOKU 7477

			4		6			
					2	7		
	6	8				9		
5	3							6
				6				
7							9	2
		9				8	5	
		2	1					
			3		4			

• प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. • पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. • पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सु-डोकू 7476

2	9	7	1	3	8	4	6	5
3	1	6	5	8	4	2	9	7
5	4	8	7	9	2	6	3	1
9	2	1	4	7	3	8	5	6
7	8	3	6	1	5	9	2	4
4	6	5	9	2	8	1	7	3
1	7	4	2	5	9	3	6	8
6	3	2	8	4	7	5	1	9
8	5	9	3	6	1	7	4	2